ISSN 2320–7175(0), 2348-9197(P)

हिमाचल प्रदेश में प्रचलित गुग्गा गाथा का साहित्यिक एवं सांगीतिक अध्ययन

DR. KASHMIR SINGH
Assistant Professor (Vocal), Govt. College, Jukhala, Bilaspur

सार संक्षेपिका

गुग्गा गाथा हिमाचल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों सोलन, बिलासपुर, हमीरपुर, ऊना, कांगड़ा, मण्डी में प्रचलित है तथा कुल्लु, चम्बा, शिमला एवं सिरमौर के कुछ हिस्सों में इसकी मान्यता है। इतिहासकारों का मत है कि गुग्गा गाथा का प्रचलन हिमाचल में राजपूतों के आगमन के साथ ही हुआ। गुग्गा चौहान वंश का राजा था, जिसका जन्म गांव ददरेड़ा, जिला चुरू, राजस्थान में हुआ था। गुग्गा की सर्परक्षक, जादू तन्त्र से मुक्ति व ईच्छापूरक देवता के रूप में पूजा की जाती है। प्रतिवर्ष रक्षाबन्धन से लेकर गुग्गा नवमी के पिछले दिन तक 6 से 8 लोगों की मण्डली घर–घर जाकर गुग्गा गाथा गाती है। भाषा की दृष्टि से गुग्गा गाथा में क्षेत्रियता की प्रधानता रहती हैं। स्थानीय उप–भाषाओं में गाए जाने के बावजूद भी इसमें राजस्थानी और पंजाबी शब्दों का बाहुल्य है। गुग्गा गाथा के साथ अनेक प्रकार के लोकवाद्यों का प्रयोग किया जाता है जैसे एकतारा, सरन्दा, द्वातरा, हारमोनियम, डमरू, खड़ताल तथा कौली–घंटी इत्यादि। गुग्गा गाथा में प्रयुक्त स्वरों का आरोही–अवरोही क्रम अत्यन्त सरल तथा स्पष्ट रहता है। जोरदार, बुलन्द एवं ऊंची आवाज में स्वर लगाना इसकी अपनी विशेषता है। गुग्गा गीतों में अनेक रागों की छाया देखी जा सकती है, परन्तु पहाड़ी राग की छाया सबसे अधिक दृष्टिगोचर होती है। गुग्गा गीतों में लय व ताल का सर्वोच्च स्थान है। गुग्गा गाथा में शास्त्रीय संगीत में प्रयोग की जाने वाली तालों जैसे कहरवा, दादरा, खेमटा और दीपचन्दी इत्यादि तालों के बराबर के वजन वाली तालें प्रयोग की जाती हैं।

बीज शब्द

हिमाचल प्रदेश, गुग्गा गाथा, संगीत

भूमिका

लोक गाथा कथात्मकता और गेयता से युक्त एक ऐसी रचना है, जो मौखिक परम्परा में पीढ़ी दर पीढ़ी निरन्तर विकसित होती रहती है। अज्ञात रचनाकार, मौखिक परम्परा, गेयता, संगीत तथा नृत्य का संयोग, दीर्घ कथानक, स्थानीयता की गंध इत्यादि लोकगाथाओं की अनेक विशेषतायें हैं।

गुग्गा गाथा हिमाचल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों सोलन, बिलासपुर, हमीरपुर, ऊना, कांगड़ा और मण्डी में प्रचलित है तथा कुल्लु, चम्बा, शिमला एवं सिरमौर के कुछ हिस्सों में इसकी मान्यता है। यद्यपि हिमाचल के जिन भागों में गुग्गा की मान्यता है, वह कब और क्यों आरम्भ हुई, इसके सम्बन्ध में लिखित साक्ष्यों का प्रायः अभाव ही है। इतिहासकारों का मत है कि गुग्गा गाथा का प्रचलन हिमाचल में राजपूतों के आगमन के साथ ही हुआ। गुग्गा गाथा यहां तब प्रचलित हुई जब राजपूतों का पहाड़ी रियासतों पर अधिकार हो गया। इसका समय सत्रहवीं शताब्दी माना जाता है।

गुग्गा चौहान वंश का राजा था, जिसका जन्म गांव ददरेड़ा, जिला चुरू, राजस्थान में हुआ, और प्राचीन गुग्गामाढ़ी भी राजस्थान में ही है। यह कस्बा गोगामाढ़ी, जिला हनुमानगढ़ में स्थित है। इतिहासकारों का मत है कि गुग्गा की फिरोजषाह तुगलक के साथ लड़ाई हुई थी, जिसमें गुग्गा वीरगति को प्राप्त हुआ था। गुग्गा गाथा का प्रादुर्भाव राजस्थान में ही माना जाता है और आलू

नामक तेली को गुग्गा गाथा को पद्य में बांधकर गाने वाला पहला व्यक्ति माना जाता है। धीरे–धीरे यह गाथा राजस्थान से गुजरात, हरियाणा, पंजाब और हिमाचल प्रदेश तक फैल गई और निरन्तर विकसित होती गई ।

गुग्गा गाथा

मारूदेश के राजा जैम्बर और रानी बाछल के कोई सन्तान नहीं थी। रानी ने गुरू गोरखनाथ की भक्ति की जिससे प्रसन्न होकर गुरू ने रानी को डेरे पर आकर पुत्र प्राप्ति हेतु फल ले जाने के लिए बुलाया। परन्तु रानी की छोटी बहन काछल ने धोखे से गुरू गोरखनाथ से फल प्राप्त कर लिया, जिससे बाद में उसे अर्जुन–सूर्जन नामक दो पुत्रों की प्राप्ति हुई। जब रानी बाछल फल लेने के लिए गुरू के पास गई तो उनके पास फल नहीं था। सारी बात समझकर गुरू गोरखनाथ ब्रम्हा, विश्णु और महेष की सहायता से फल लेकर आये जो उन्होंने रानी बाछल को दिया ।

रानी बाछल ने फल ग्रहण किया तो वह गर्भवती हो गई । रानी सरसागढ़ अपने मायके जा रही थी, तो तखी नामक नाग ने बैलगाड़ी खींच रहे बैल को डंग मार दिया, जिससे बैल मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। गुग्गा ने गर्भ से ही अपने प्रभाव से उसे ठीक कर दिया और माता बाछल को कहा कि वह मारू देश वापिस चले। बाछल मारू देश पहुंच गई जहां गुग्गा का जन्म हुआ। गुग्गा चौहान जब 5 वर्ष के थे, तब नागों नें उन पर हमला कर दिया। गुग्गा ने सांपों को मार–मार कर ढेर लगा दिये । तब नागराज बासुकी घबरा गये और गुग्गा से क्षमा याचना की और कहा कि आज से हम आपके कहे अनुसार चलेंगे और जहां पर कोई आपका नाम भी ले लेगा हम उस स्थान पर भी नहीं जायेंगे । तब गुग्गा ने उन्हें जीवनदान दे दिया ।

कौरू देश के राजा संजीपल ने अपनी बेटी सुरीहल का रिस्ता गुग्गा चौहान से तय किया और बाद में तोड़ लिया, तब गुग्गा चौहान गुरू गोरखनाथ की शरण में गये और तखीनाग की सहायता से दोबारा रिस्ता पक्का करवाया। संजीपल ने शादी के लिए शर्त रखी कि बारात में 8 लाख घोड़े, 9 लाख हाथी और 10 लाख बाराती होने चाहिए। जिसे गुरू गोरख नाथ ने भगवान शंकर की सहायता से पूरा किया और गुग्गा की शादी करवा दी। जब गुग्गा चौहान शादी करके वापिस लौट रहे थे, तो रास्ते में उसके मौसेरे भाईयों अर्जुन–सूर्जन ने उसे घेर लिया और राज्य का हिस्सा मांगने लगे। गुग्गा ने राज्य में हिस्सा देने से मना कर दिया ।

अर्जुन–सूर्जन ने अपने नाना के साथ मिलकर सेनाओं सहित मारू देश पर आक्रमण कर दिया। दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ, जिसमें गुग्गा ने अर्जुन–सूर्जन को मौत के घाट उतार दिया और युद्ध विजयी रहा। गुग्गा द्वारा अर्जुन–सूर्जन को मारने की बात सुनकर माता बाछल ने गुग्गा को बहुत भला–बुरा कहा और मारू देश से निकाल दिया। गुग्गा वापिस लड़ाई के मैदान में पहुंच गये, जहां चारों तरफ लाशें ही लाशें बिखरी पड़ी थी। गुग्गा ने सबका दाह–संस्कार किया और

स्वयं धरती में समाहित हो गये। रानी सुरिहल ने विशणु भगवान की घोर तपस्या की जिससे प्रसन्न होकर भगवान ने गुग्गा को सुरिहल से मिला दिया। गुग्गा रोज रात को सुरिहल से मिलने महलों में आने लगे। माता बाछल ने एक दिन छुपकर गुग्गा को पकड़ लिया और मारू देश में ही रहने का आग्रह किया। तब गुग्गा ने कहा कि मैं ऐसे नहीं रूक सकता और कहा कि कल निश्चित स्थान पर मैं प्रकट होकर यहीं आ जाऊंगा, परन्तु वहां पर कोई शोर नहीं होना चाहिए । निश्चित स्थान पर जब गुग्गा प्रकट होने लगे तो आधे ही प्रकट हुए थे कि कौतुहलवश लोगों ने शोर मचा दिया और गुग्गा वहीं पर पत्थर बन गये। बाद में इस स्थान पर गुग्गामाढ़ी का निर्माण किया गया।

साहित्यिक पक्ष

भाषा की दृष्टि से गुग्गा गाथा में क्षेत्रियता की प्रधानता रहती है, किन्तु गुग्गा गाथा का सूक्ष्म अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि यह सीधे राजस्थान से यहां नहीं आई अपितु राजस्थान से पहले पंजाब और फिर हिमाचल के क्षेत्रों में आई। स्थानीय उप–भाषाओं में गाए जाने के बावजूद भी इसमें राजस्थानी और पंजाबी शब्दों का बाहुल्य है। क्षेत्र विशेष में गाथा की भाषा बदलती रहती है। गुग्गा गाथा का जो रूप हिमाचल प्रदेश में प्रचलित है, भाषा के अलावा अन्य कोई बहुत अन्तर उसमें नहीं है उदाहणार्थ गुग्गा गाथा का एक प्रसंग प्रस्तुत किया जा रहा है–

गुग्गा शादी से सम्बन्धित प्रसंग

तक्षक नागे किरत कमाया कैल कमाया, बण गया उडणु नाग,
लाटणी मारी डारी मारी, घुमदा गासो गास,
मजलें–2 नाग जे चलेया, गोरखा दे डेरे आया,
फेरियां लैदां प्रक्रमा लैंदा, चरणे सीस नुआया ।
लई कागद तक्षक नागे, गोरख दे हथ फड़ाया,
लई परवाना गुरू गोरख नाथे, गुग्गे दे हथ पकड़ाया,
लई परवाना गुग्गा जे पड़दा, नैण भरी भर रोये,
गोरख नाथ क्या उठ बोले, बेटा तू क्यों नैण भरी रोये ।
अठुई–नऊईं दे लगन लगाणें, दसवीं जो विदा करनी बरात,
छेआ महीनयां दा रस्ता गुरू मेरया, सुरिहल ब्याही ना जावे ।

सांगीतिक पक्ष

हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जनपदों में गुग्गा जाहरपीर की लोक देवता के रूप में पूजा की जाती है। यहां के जनमानस में गुग्गा के प्रति अटूट श्रद्धा एवं विस्वास है। जिसका मुख्य कारण उसमें सर्पदंश से व्यक्ति को निरोग और स्वस्थ करने की अद्भुत शक्ति है। गुग्गा मूर्ति धोए जल का पान सर्पदंशित व्यक्ति को कराया जाता है और गुग्गा स्थान की कुछ मिट्टी उसे खिलाई जाती है,

जिससे वह जल्दी ही ठीक हो जाता है। हिमाचल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में गुग्गा गाथा के अनेक सांगीतिक रूप प्रचलित हैं। यहां पर कुछ गीतों को स्वर लिपियों सहित प्रस्तुत किया जा रहा है।

(1) गुग्गा जन्म से सम्बन्धित प्रसंग

रानी बाछल :– आधी–आधी राती हां जी,

बोलो पक्के राते हांजी,

कमरूए दर्द घनेरी, होजी कमरूए दर्द घनेरी ।

तुरत बल्वाई हांजी, बोलो हीरापल बांदी हांजी,

हीरापल बांदी होजी, बोलो बाछले तुरत बल्वाई।

बांदी :– हाथडुआ जोड़ी हांजी, बांदी अर्ज लगांदी हांजी,

किस मतलब जो बल्वाई,मईया किस मतलब जो बल्वाई।

रानी बाछल :– दौड़ी के जायां हांजी, मेरी हीरापल बांदिए हांजी

दाईया जो ल्यायां बल्वाई, घोगा दाईया जो ल्यायां बल्वाई।

चानणों रे डोले हांजी, घोगा दाई जे बैठी हां जी,

पंहुची बाछलारे हांजी, बोलो बाछलारे महले हांजी।

आधी–आधी राती हांजी, बोलो पक्के द्धराते हांजी,

जन्मे छतरी चौहान, हांजी जन्में छत्री चौहान।

स्वर लिपि

1	2	3	4	5	6	7	8
–	सा	रे	मम	प	–	नि	–
ऽ	आ	धी	आधी	रा	ऽ	ती	ऽ
सां	सां	–	–	–	–	सां	रें
हां	जी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बो	लो
–	नि	नि	धध	प	प	म	–
ऽ	ऽ	प	क्के	द्ध	रा	ते	ऽ
ध	–	म	–	ग	–	रे	सा
हां	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
X				0			

शेष पंक्तियां भी इसी प्रकार से गाई जायेंगी।

भावार्थ : आधी रात का समय था और बहुत अंधेरी रात थी। रानी बाछल के पेट में बहुत तेज दर्द होने लगा। तब उन्होंने अपनी नौकरानी को बुलाया जिसका नाम हीरापल था। हीरापल ने हाथ

जोड़कर रानी से पूछा कि मुझे किसलिए बुलाया है। रानी ने कहा कि जल्दी जाओ और घोगादाई को बुलाकर ले आओ। हीरापल घोगादाई को बुलाकर ले आई जो चन्दन के डोले में बैठकर रानी के महलों में पहुंची। तब गुग्गा चौहान का जन्म हुआ।

2. गुग्गा शादी से सम्बन्धित प्रसंग

गुग्गा : ब्याणी पर ब्याणी राजे संजिये री लड़की –2
चरणांगे देणे नई प्राण बाबा गोरखा, चरणांगे देणे नई प्राण होजी हांजी हांजी हां

बाबा गोरख : प्यालो ते ल्याइदूं तिजो नागो री पदमां–2
स्वर्गो ते ल्याइदूं तिजो इन्दरों री परिया,
स्वर्गो ते ल्याइदूं तिजो इन्दरों री जी हांजी–हांजी हां ।

गुग्गा : याही पर राणी मैं छाड़ी पर सकदा–2
क्वारियारी आऊंदी मिंजो लाज बाबा गोरखा,
क्वारियारी आऊंदी मिंजो लाज होजी हांजी हांजी हां

बाबा गोरख : कौरू देश बेटा ब्याहणे नी जाणां–2
कौरू देश जादूखोर बेटा मेरया, कौरू देश जादूखोर होजी हांजी हांजी हां ।

गुग्गा : ब्याणी पर ब्याणी राजे संजिये री लड़की –2
चरणांगे देणे नई प्राण बाबा गोरखा, चरणांगे देणे नई प्राण होजी हांजी हांजी हां

स्वर लिपि

1	2	3	4	5	6	7	8
सांसां	सांसां	सांसां	सांसां	निनि	निनि	धध	प
ब्याणी	पर	ब्याणी	राजे	संजि	येरी	लड़	की
रेंरें	सांसां	सांसां	सांसां	निनि	निनि	धध	प
ब्याणी	पर	ब्याणी	राजे	संजि	येरी	लड़	की
धध	धध	धध	पम	पप	पग	रेरे	सा
चर	णांगे	देणे	नई	प्राण	बाबा	गोर	खा
रेरे	रेरे	रेरे	रेसा	स	गग	गग	रेसा
चर	णांगे	देणे	नई	प	राण	होजी	ऽ ऽ
ग	ग	ग	ग	सा	–	–	–
हां	जी	हां	जी	हां	ऽ	ऽ	ऽ

शेष पंक्तियां भी इसी प्रकार से गाई जायेंगी।

भावार्थ : गुग्गा चौहान ने बाबा गोरखनाथ से कहा कि मैं राजा संजीपल की लड़की से ही शादी करूंगा वरना आपके चरणों में प्राण त्याग दूंगा। बाबा गोरख नाथ उसे समझाते हुए कहते हैं कि मैं तुम्हारे लिए पाताल से नागराज की पदमा और स्वर्गलोक से इन्द्र की परियां ले आऊंगा । गुग्गा चौहान कहते हैं कि मैं शादी करके रानी त्याग सकता हूं किन्तु शादी से पहले रिस्ता टूट जाये, यह मुझे मंजूर नहीं है। तब बाबा गोरखनाथ कहते हैं कि बेटा कौरू देश में शादी मत करो, वह जादूखोरों का देश है, लेकिन गुग्गा चौहान अपनी ज़िद पर अडिग रहते हैं ।

3. लड़ाई से सम्बन्धित प्रसंग

नीलेरी सवारी राजा गुग्गा चौहान चढ़ेया–2
पहुंचेया गढ़गाजण जाई राजा मेरेया–2
सुर्ख जे भौरे राजा गउआ जे राखियां–2
जउडु सुत्ते पलंग ढलाई राजा–2
सुरमा गउआ नों गुग्गा चौहान ने देखेया–2
गउआ रे फंदन छुडाये राजा मेरेया–2
सुईने गलावां गुग्गा चौहान ने कटिया–2
गउआं लाई घोड़े रे हाणे राजा मेरया–2
मारी तलवार राजा गुग्गा चौहान ने–2
जउडुआं रे शीस कटाये राजा मेरया–2 ।

स्वर लिपि :

1	2	3	4	5	6	7	8
				सां	सां	सां	सां
–	गग	प	ध	वा	री	रा	जा
ऽ	नीले	री	स				
				ध	नि	प	–
–	निनि	नि	निनि	च	ढ़े	या	ऽ
ऽ	गुग्गा	चौ	हान				
				म	ध	प	गग

–	पप	प	प	ग	ढ़	गा	जण
ऽ	पहुं	चे	या				
				सा	–	सा	सा
–	रेग	रे	सा	मे	ऽ	रे	या
ऽ	जाई	रा	जा				

शेष पंक्तियां भी इसी प्रकार से गाई जायेंगी।

भावार्थ : गुग्गा चौहान अपने नीले घोड़े पर सवार होकर गढ़गाजण देश में पहुंच गये। जहां एक सुनसान जगह पर जौडु (अर्जुन–सूर्जन) सुरमा गाय को बांधकर पलंग पर सोये हुए थे। जब गुग्गा चौहान ने सुरमा गाय को देखा तो उसके गले में बांधी हुई सोने की जंजीरें काट डाली और नीले घोड़े के हवाले कर दिया। फिर गुग्गा चौहान ने तलवार से जउडुओं (अर्जुन–सूर्जन) के सिर काट दिए।

उपसंहार

लोकजीवन में लोक वाद्यों का महत्वपूर्ण स्थान है, इनका निर्माण स्थानीय कलाकारों द्वारा किया जाता है। लोकगाथाओं में लोकवाद्य सामाजिक मनोरंजन का प्रमुख साधन हैं। हिमाचल के विभिन्न जनपदों में प्रचलित गुग्गा गाथा के साथ समस्त प्रकार के लोकवाद्यों का प्रचलन देखने को मिलता है। इन वाद्यों में शहनाई, अलगोजा, एकतारा, सरन्दा, द्वातरा, हारमोनियम, डमरू, खड़ताल तथा कौली–घंटी इत्यादि मुख्य रूप से प्रयोग किए जाते हैं ।

गुग्गा गाथा में प्रयुक्त स्वरों का आरोही–अवरोही क्रम अत्यन्त सरल तथा स्पष्ट रहता है। जोरदार, बुलन्द एवं ऊंची आवाज में स्वर लगाना इसकी अपनी विशेषता है। गुग्गा गाथा कलाकार तार सप्तक के स्वरों का अधिक प्रयोग करते हैं। गुग्गा गाथा गायक किसी निश्चित स्वर को आधार मानकर नहीं गाते हैं, बल्कि अलग–2 गीतों को अलग–2 स्केलों से गाते हैं। गुग्गा गीतों में मुर्की, खटका तथा कण आदि का प्रयोग भी देखने को मिलता है। यद्यपि लोक–कलाकारों को इन सब क्रियाओं का कोई शास्त्रीय ज्ञान नहीं होता है, फिर भी यह सब अनायास ही उनके कंठ से निकलती हैं। गुग्गा गीतों में स्वरों का लगाव भाव के अनुरूप पाया जाता है।

हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जनपदों में प्रचलित गुग्गा गीतों में सम्वाद भाव देखने को मिलता है। गुग्गा गीतों में मुख्यतः षडज–पंचम और षडज–मध्यम भाव दृष्टिगोचर होता है। गुग्गा गीतों के साथ प्रयुक्त ताल वाद्य डमरू के वादन में सम्वाद भाव रखने का प्रयास किया जाता है। डोरियों को बाएं हाथ से कसाव देकर ढीला छोड़ा जाता है, जिससे डमरू में लय के साथ–साथ विभिन्न ध्वनियां उत्पन्न होती हैं जो गुग्गा गीतों के साथ सम्वाद भाव स्थापित करती हैं। सम्वाद भाव स्थापित होने पर गीत अधिक मधुर व रंजक हो जाता है। गुग्गा गाथा गायन में प्रयुक्त तार वाद्य धन्तारू, एकतारा, सरंदा, द्वातरा आदि की तारों को सम्वाद भाव से मिलाया जाता है।

गुग्गा गीतों में अनेक रागों की छाया देखी जा सकती है, परन्तु पहाड़ी राग की छाया सबसे अधिक दृष्टिगोचर होती है। पहाड़ी राग के अलावा भूपाली, दुर्गा, विलावल, खमाज, पीलू और भीमपलासी आदि रागों की छाया भी कहीं–कहीं देखी जा सकती है। लोक गीत कभी भी विशुद्ध रूप से शास्त्रीय बन्धन में प्रतिबन्धित नहीं होते हैं, अतः इन्हें रागों की परिधि में नहीं बांधा जा सकता है। परन्तु इन गीतों में विभिन्न रागों का आभास झलकता है ।

हिमाचल प्रदेश में प्रचलित गुग्गा गीतों में लय व ताल का सर्वोच्च स्थान है मध्य और द्रुत लय का प्रयोग अधिक देखने को मिलता है। डमरू, कौली–घण्टी तथा खड़ताल आदि वाद्य यंत्र लय दिखाने के लिए प्रयुक्त होते हैं। इन वाद्यों पर ताल के बोल को स्पष्टतय नहीं निकाले जा सकते हैं, परन्तु ताल में प्रयुक्त मुख्य स्थानों को आघातों द्वारा स्पष्ट करने में और लय को मजबूत करने में इन वाद्यों का प्रयोग बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। गुग्गा गाथा में शास्त्रीय संगीत में प्रयोग की जाने वाली तालों जैसे कहरवा, दादरा, खेमटा और दीपचन्दी इत्यादि तालों के बराबर के वजन वाली तालें प्रयोग की जाती हैं। इनके बोल शास्त्रीय संगीत की तालों से कुछ भिन्न होते हैं। इन तालों को लिपिबद्ध करने की बहुत कमी देखी गई है, मुख्यतः इनके वाद्क मौखिक रूप से विभिन्न प्रकार की लयकारियों का वाद्न कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते हैं ।

संदर्भ

साक्षात्कृत गुग्गा गाथा कलाकार

1. अमीचंद गिल, गांव व डाकघर सपाटू, तहसील व जिला सोलन (हि.प्र.)
2. अश्वनी कुमार घई, 128 गुग्गा मन्दिर, कृष्णा नगर, शिमला (हि.प्र.)
3. अनुप्पा सिंह, गांव व डाकघर जरग, तहसील रेणुका, जिला सिरमौर (हि.प्र.)
4. अमर चन्द, गांव व डाकघर राजनगर, तहसील व जिला चम्बा (हि.प्र.)
5. गुरदासु राम, गांव व डाकघर बखालग, तहसील अर्की, जिला सोलन (हि.प्र.)
6. चरणु राम, गांव ओथड़ा, डाकघर सिन्हुता, तहसील भटियात, जिला चम्बा (हि.प्र.)
7. चैतरू राम, गांव व डाकघर झंगी, तहसील सरकाघाट, जिला मण्डी (हि.प्र.)
8. टैहल सिंह, गांव नंगावाग, डाकघर राईसन, तहसील व जिला कुल्लु (हि.प्र.)
9. नामदेव, गांव व डाकघर चौकी मन्यार, तहसील बंगाणा, जिला ऊना (हि. प्र.)
10. पांदी राम, गांव व डाकघर दैहण, तहसील पालमपुर, जिला कांगड़ा (हि.प्र.)

11. परसराम, गांव जोल, डाकघर बीड़–बगेड़ा, तहसील सुजानपुर, जिला हमीरपुर (हि.प्र.)
12. परसराम, गांव घमराड़ा डाकघर सोलधा, तहसील सदर, जिला बिलासपुर (हि.प्र.)
13. पवन कुमार, गांव व डाकघर परागपुर, तहसील देहरा, जिला कांगड़ा (हि.प्र.)
14. मेहर चन्द, गांव व डाकघर चक्षराय, तहसील अम्ब, जिला ऊना (हि.प्र.)
15. रघुनाथ, गांव बुधवीं डाकघर गलोड़, तहसील नादौन, जिला हमीरपुर (हि.प्र.)
16. रजनीश कुमार, गांव गुगेड़ी, डाकघर ढालपुर, तहसील व जिला कुल्लु (हि.प्र.)
17. लालु राम, गांव हरगुनैन, डाकघर हराबाग, तहसील जोगिन्द्रनगर, जिला मण्डी (हि.प्र.)
18. सुन्दर लाल, गांव करोट, डाकघर डोभा, तहसील सदर, जिला बिलासपुर (हि.प्र.)
19. सतपाल, गांव करोट, डाकघर ईलाहा, तहसील अम्ब, जिला सिरमौर (हि.प्र.)
20. सिद्धु राम, गांव खोहर, डाकघर बृखमणी, तहसील सदर, जिला मण्डी (हि.प्र.)

Pratibha Spandan